8

प्रेम की आत्मा

(1 कुरिन्थियों 13)

1 कुरिन्थियों 13 की समीक्षा किए बिना पवित्र आत्मा का अध्ययन अधूरा ही होगा। यह संयोग की बात नहीं है कि आत्मिक दानों पर पौलुस का संदेश बीच में (1 कुरिन्थियों 12-14) दिया गया है, हमारे पास प्रेम पर नये नियम का सबसे बड़ा लेख है। पवित्र आत्मा का मुख्य कार्य परमेश्वर की संतान के व्यवहार तथा कार्यों में यीशु जैसे और बनने में सहायता करना है। पवित्र शास्त्र के द्वारा परमेश्वर हमें शैतान और स्वयं की आत्मा से बाहर तथा यीशु मसीह की आज्ञाकारिता के आनन्द में बुलाता है। शैतान के अधीन, ''उस आत्मा के अनुसार ... जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है'' (इफिसियों 2:2), के वास तथा संचालन से चलते हुए, उनके जीवनों में ''शरीर के काम'' दिखाई देते हैं। पौलुस ने चेतावनी दी, ''कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे'' (गलातियों 5:19-21)।

दूसरी ओर, परमेश्वर के लोग, यीशु के ज्ञान के द्वारा ''ईश्वरीय स्वभाव के समभागी'' (2 पतरस 1:4) हो गए हैं। परमेश्वर की उपस्थिति तथा सहायता के द्वारा, हम ''आत्मा का फल'' (गलातियों 5:22, 23) ला सकते हैं और, यीशु जैसे बन सकते हैं। हमारे जीवनों में उसका फल लाने के लिए आत्मा उतना ही आवश्यक है, जितना हमारी शारीरिक देहों के लिए ऑक्सीजन। दाख के रूप में मसीह के साथ आत्मिक एकता के बिना, शाखाएं फल नहीं ला सकतीं। केवल यीशु में बने रहकर और उसके आत्मा, उसके वचनों को अपने में बने रहने की अनुमति देकर ही हम उसमें फल देने वाली शाखाएं बन सकते हैं (यूहन्ना 15:5, 7)।

जो लोग अपने उद्धार के प्रमाण के रूप में अन्य भाषाओं के दान की इच्छा करते हैं, वे मसीहियत के ज़ोर को अन्य भाषाओं तथा आश्चर्यकर्म के दानों पर रख रहे हैं। इसके विपरीत, परमेश्वर अपने पुत्र के स्वरूप में आत्मिक विकास पर ज़ोर देता है। धोखा न खाएं! हमारे पुत्र होने का वास्तविक प्रमाण अन्य भाषाएं बोलने या आश्चर्यकर्म करने के द्वारा नहीं दिखाया जाता, ''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:7)। आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारे वास्तविक सम्बन्ध का प्रमाण उसके वचन की आज्ञा मानने के द्वारा हमारे जीवनों में आत्मिक फल लाने में हमारी सहायता करने में देखा जाता है।

हर मसीही, सुसमाचार के आज्ञापालन पर परमेश्वर के दान के रूप में पवित्र आत्मा पाता है (प्रेरितों 2:38; 5:32)। वचन को अपने औज़ार के रूप में इस्तेमाल करते हुए, ''पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है'' (रोमियों

5:5)।''पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है'' और ''परमेश्वर का प्रेम'' में व्यापक सम्बन्ध पर ध्यान दें। पवित्र आत्मा की उपस्थिति के वास के बिना, परमेश्वर का प्रेम केवल एक दार्शनिक विषय रह जाता है, जिस पर चर्चा करके उसका विश्लेषण किया जा सकता है।

प्रेम की उत्कृष्टता (आयतें 1-3)

1 कुरिन्थियों 13 में पौलुस ने स्पष्ट कर दिया कि हमारे जीवनों में परमेश्वर का प्रेम दिखाई देना आत्मिक दानों से अधिक महत्वपूर्ण है! कुरिन्थुस में भाई ''बड़े से बड़े वरदानों की धुन में'' थे, परन्तु प्रेम ''सबसे उत्तम मार्ग'' था (1 कुरिन्थियों 12:31)। पौलुस ने दावा किया कि प्रेम के बिना अन्य भाषाओं का दान ''ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ'' है (1 कुरिन्थियों 13:1)। प्रेम की प्रेरणा के बिना भविष्यवाणी, ज्ञान, विश्वास और यहां तक कि परोपकार के बड़े से बड़े कार्य तथा अपने आप को बलिदान करने से कुछ लाभ नहीं होता (1 कुरिन्थियों 13:1-3)।

आत्मिक प्रौढ़ता और अपने जीवन में परमेश्वर के प्रेम को दिखाने के लिए, मसीह को जानना, उसके सामर्थी प्रेम को समझना और दूसरे के साथ उस प्रेम को बांटना आवश्यक है।''सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है'' (1 यूहन्ना 5:19), इसलिए यदि हम अपने जीवनों में उसके प्रेम को दिखाना चाहते हैं, तो हमें पूरी तरह से परमेश्वर पर और उसके वचन के प्रकाश पर निर्भर रहना आवश्यक है। इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को विदाई देते समय पौलुस के ये शब्द थे, ''अब मैं तुम्हें परमेश्वर को और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है'' (प्रेरितों 20:32)।

आत्मिक विकास के लिए दो आवश्यक बातें हैं, परमेश्वर और उसके अनुग्रह का वचन। हमारे जीवनों में आत्मा की व्यक्तिगत उपस्थिति ही हमें प्रेम में बनने के योग्य बनाती है! प्रेम का स्थान कभी आश्चर्यकर्म, आत्मिक दानों को नहीं दिया गया था! ऐसे दान केवल एक लक्ष्य को पाने के माध्यम थे। वे ईश्वरीय माध्यम थे, जिनके द्वारा परमेश्वर अनुग्रह की अपनी नई वाचा को प्रकट करके उसकी पुष्टि कर सकता था। मसीही लोग ''हर भले काम के लिए तत्पर'' (2 तीमुथियुस 3:17) जो परमेश्वर के वचन से होते हैं, न कि दानों से।

स्वतन्त्रता की सिद्धि और सम्पूर्ण व्यवस्था के प्रकट होने, [पौलुस भाइयों को '' आत्मिक वरदानों की धुन में]... कि ... कलीसिया की उन्नति हो'' (1 कुरिन्थियों 14:12)। कलीसिया का सुधार दानों से नहीं, बल्कि उन दानों के द्वारा प्रकट परमेश्वर के सामर्थी वचन से हुआ था। उन दानों के बिना, न तो नया नियम मिलता, और न ही परमेश्वर के वचन के बिना प्रेम में देह बन सकती थी। इससे पता चलता है कि पौलुस भाइयों से क्यों भविष्यवाणी के दान का प्रयास करने की इच्छा रखता था। भविष्यवाणी का दान आश्चर्यकर्म का वह विशेष दान था, जिसके द्वारा पवित्र आत्मा ने परमेश्वर की प्रेरणा से वचन को प्रकट किया। एक बार फिर, कलीसिया भविष्यवाणी के दान से नहीं बनी, बल्कि भविष्यवाणी के दान के द्वारा प्रकट परमेश्वर के वचन से विश्वास, आशा और प्रेम में दृढ़ हुई। यह पहली शताब्दी में भी

सच था और आज भी सच है।

प्रेम का विश्लेषण (आयतें 4-7)

1 कुरिन्थियों 13:4-7 में पौलुस ने परमेश्वर के प्रेम का विश्लेषण किया। इन आयतों में जहां-जहां ''प्रेम'' आया है, वहां ''परमेश्वर'' लगाकर उन्हें फिर पढ़ें, और आप यूहन्ना के वाक्यों की सच्चाई देखेंगे कि ''परमेश्वर प्रेम है'' और यह कि ''जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से है और परमेश्वर को जानता है'' (1 यूहन्ना 4:7, 8)। परमेश्वर का आत्मा प्रेम के आत्मा को जन्म देता है। अपनी मनुष्यता के द्वारा हम उसके ईश्वरीय प्रेम को तभी दिखा सकते हैं, जब हम उसके आत्मा को अपने अन्दर रहने की अनुमति देंगे! आत्मा की उपस्थिति के बिना पौलुस ने घोषणा की कि ''... मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते'' (रोमियों 7:18)। हम प्रेम करने की इच्छा कर सकते हैं, पर प्रेम हमारे जीवनों में तभी आ सकता है जब हम ''शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में'' हों (रोमियों 8:9)। मसीही लोगों के लिए दूसरों से प्रेम करने की ईश्वरीय सामर्थ के लिए अपने आप से मर कर परमेश्वर के आत्मा में भरोसा रखना आवश्यक है। हम पढ़ते हैं, ''परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। इसी से हम जानते हैं, कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है'' (1 यूहन्ना 4:12, 13)।

परमेश्वर के आत्मा का वास अनन्त जीवन और पृथ्वी पर परमेश्वर के लोगों के लिए जीवन का स्रोत है। मसीही लोगों ने ''आज्ञा न मानने वालों में कार्य'' (इफिसियों 2:2) करने वाले आत्मा से मन फिराया है। अब ''मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं, कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिए मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएं, परन्तु उसके लिए जो उन के लिए मरा और फिर जी उठा'' (2 कुरिन्थियों 5:14, 15)।

पौलुस ने यीशु में फलदायक जीवन की मुख्य बात बताई, जब उसने कहा कि ''जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है'' (गलातियों 5:24)। ''अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित'' समझने पर (रोमियों 6:11), हम में उसका फल लाने के लिए पवित्र आत्मा हमें स्वतन्त्र करता है। क्योंकि ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया'' (रोमियों 6:6), अब हम उस विश्वास के द्वारा जीवित हैं कि पाप का हमारा पुराना मनुष्यत्व और लज्जा ''मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया'' है (गलातियों 2:20)। पौलुस ने कहा, ''अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है।'' हर दिन हमें ''भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित'' (रोमियों 6:11) समझना आवश्यक है। हमारे द्वारा अपने प्रेम के जीवन में जीने के लिए और हमारे जीवनों में अपना फल लाने के लिए आवश्यक है कि मसीही लोग अपने आप से मर जाएं।

प्रेम का स्थायित्व (आयतें 8-13)

अगली छह आयतें, 1 कुरिन्थियों 13:8-13 को देखते हुए कृपया ध्यान रखें कि पौलुस इस अध्याय में प्रेम की उत्तमता पर ज़ोर दे रहा था। संदर्भ को ध्यान में रखने के साथ इन आयतों का अध्ययन करने से ही हमें पौलुस के संदेश की सही समझ मिलेगी।

आयत 8 कहती है, ''प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यवाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी; भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।'' प्रेम कभी टलता नहीं, क्योंकि ''परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8) और परमेश्वर कभी टलता नहीं। जैसा कि हमने पहले ही देखा है, जो विशेषताएं हमारे परमेश्वर की हैं, वही उसके प्रेम की हैं। ''परमेश्वर कभी टलता नहीं'' क्योंकि, परमेश्वर की तरह, उसका स्वभाव भी अनन्तकालिक है। *Agape* प्रेम के विपरीत, भविष्यवाणी और ज्ञान के दान ''समाप्त हो जाएंगे'' (यू.: *katargeo*) और भाषाएं ''जाती रहेंगी'' (यू.: *pauomai*) (1 कुरिन्थियों 13:8)। दो अलग-अलग यूनानी शब्दों का इस्तेमाल हुआ है, इसलिए आइए हम दोनों शब्दों को देखते हैं।

आश्चर्यकर्म से मिला ज्ञान जाता रहेगा

पहले, पौलुस ने कहा कि भविष्यवाणी और ज्ञान ''समाप्त हो जाएंगे।'' ''समाप्त होने'' के लिए यूनानी शब्द (*katargeo*) का अर्थ किट्टल ने ''निष्क्रियता के लिए दोष लगाना, नाश करना, या कार्य के क्षेत्र से हटाना'' किया है।[1] *स्ट्रॉन्ग'स एग्ज़ास्टिव कंकॉर्डेंस* में इस परिभाषा के साथ ये विचार जोड़े गए हैं: ''बन्द करना,'' ''दूर करना,'' ''विलोप करना,'' ''रद्द करना।''[2] पौलुस यह नहीं कह रहा था कि सारा ज्ञान बन्द हो जाएगा, नष्ट हो जाएगा या विलोप हो जाएगा, क्योंकि यीशु ने बताया था कि ''मेरी बातें कभी न टलेंगी'' (मत्ती 24:35)। परमेश्वर का वचन जो उसके अनन्त ज्ञान को दिखाता है, *कभी नहीं* टलेगा। इसी कारण हम पूछते हैं, ''वह ज्ञान कौन सा है, जिसके लिए पौलुस ने कहा कि 'मिट जाएगा'?'' पौलुस केवल यही कह रहा था कि *आश्चर्यकर्म* से मिला ज्ञान मिट जाएगा।

भविष्यवाणी जाती रहेगी

पहली शताब्दी में कुछ मसीही लोगों को प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा, आत्मिक दान दिए गए थे, जिनमें आश्चर्यकर्म से परमेश्वर की प्रेरणा का दान भी था। जैसा कि हमने पहले देखा है, भविष्यवाणी के दान से परमेश्वर के वचन का आश्चर्यकर्म से ज्ञान दिया गया जिसे पाने वालों को ''भविष्यवक्ता'' कहा जाता था। प्रेरितों की तरह, भविष्यवक्ता भी वचन के सिखाने वाले थे, जो पवित्र आत्मा से प्रेरणा पाकर बोलते थे। उनकी कुछ शिक्षाएं भविष्य सम्बन्धी प्रकाशन थे, लेकिन भविष्यवक्ता का मुख्य कार्य पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर के वचन को सिखाना था। भविष्यवक्ता परमेश्वर के वचन का ''पहले से बताने वाला'' होता था, और भविष्यवक्ता को मिला परमेश्वर की प्रेरणा से संदेश ''प्रभु की आज्ञा'' (1 कुरिन्थियों 14:37) माना जाता था। कलीसिया की नींव ही ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' (इफिसियों 2:20) के द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए संदेश के आधार पर थी। परन्तु पौलुस ने सिखाया कि भविष्यवाणी और ज्ञान के दान ''मिट'' जाने थे।

भाषाएं जाती रहेंगी

पहली शताब्दी में दूसरे मसीही लोगों को विदेशी भाषाओं में बात करने या भाषाओं का अर्थ करने का आश्चर्यकर्म से दान दिया गया, जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं सीखा था। पौलुस ने ऐलान किया कि ''अनेक प्रकार की भाषा और भाषाओं का अर्थ'' (1 कुरिन्थियों 12:10) बताने के ये दान ''जाते'' रहने थे (1 कुरिन्थियों 13:8)। यहां इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द *pauomai* था, जिसके अर्थ *स्ट्रॉन्ग'स एग्ज़ास्टिव कंकॉर्डेंस* में ''रोकना, यानी मना करना, बन्द करना, बाज़ आना, समाप्त होना:–बन्द होना, छोड़ना, रोकना'' किए गए हैं।[3] यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यदि आश्चर्यकर्म से अर्थात पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिया गया दान ''मिट जाना'' था, तो आरम्भिक मसीहियों को परमेश्वर की प्रेरणा देने वाला ज्ञान, जिससे वे विदेशी भाषाएं बोलते या उनका अर्थ करते थे, भी ''बन्द हो जाना'' या ''समाप्त हो जाना'' था। वह कब बन्द होना था?

पौलुस ने कहा कि आश्चर्यकर्म से मिला ज्ञान ''सर्वसिद्ध के आने'' पर ''मिट जाना'' था, (1 कुरिन्थियों 13:10)। उसने आगे कहा, ''क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यवाणी अधूरी है। परन्तु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा'' (1 कुरिन्थियों 13:9, 10)। हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया ज्ञान सर्वसिद्ध के आने पर ''मिट जाना'' था। ''सर्वसिद्ध'' आ गया जब नये नियम में परमेश्वर का वचन पूरी तरह से प्रकट कर दिया गया।

सारांश

यीशु सर्वसिद्ध प्रेम था, और जब हम अपने आप से मर कर उसे अपने में जीवित होने की अनुमति देते हैं, तो पवित्र आत्मा अपने वचन के द्वारा हमारे मनों में उसके प्रेम का फल उगाएगा। हमारे जीवनों में दिखाया गया उसका प्रेम इस बात का प्रमाण है कि वह हम में वास कर रहा है और हमारे द्वारा उसकी सामर्थ उसकी महिमा के लिए कार्य कर रही है! ''क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी ... । इस कारण हे भाइयो, अपने बुलाए जाने, और चुन लिए जाने को सिद्ध करने का भली–भांति यत्न करते जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो कभी भी ठोकर न खाओगे।'' (2 पतरस 1:8, 10)। परमेश्वर मसीही लोगों के जीवनों में प्रेम और आत्मा के फल पर बल देता है। केवल झूठे शिक्षक ही अन्य भाषाओं और बाहरी प्रदर्शनों पर ज़ोर देते हैं!

टिप्पणियां

[1]थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट में से गरहर्ड किट्टल अनुवाद और सम्पादन ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (गैंड रेपिड्स मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 1:452 में गरहर्ड डैलिंग ''*argos, argeo, katargeo.*'' [2]''कन्साइज़ डिक्शनरी ऑफ़ द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,'' स्ट्रॉन्ग'स एग्जास्टिव कमैंट्री ऑन द बाइबल, सं. जेम्स स्ट्रॉन्ग (नैशविल्ले, टैनिसी.: रॉयल पब्लिशर्स, 1979), 40 में ''*katargeo*'' [3]स्ट्रॉन्ग ''*pauo*,'' 56.